(61) Q.4. अभिप्राय (Intention) और प्रयोजन (Motive) की व्याख्या करें। कर्म की नैतिकता की निर्धारण करने में इनका क्या महत्व है?

(Discuss the nature of Motive and Intention. What is their ~~Right~~ Significance in determining the Morality of an Action.?)

Ans :→ नैतिक निर्णय का विषय समस्त ऐच्छिक कार्य है, परन्तु ऐच्छिक कार्य आन्तरिक और वाह्य दोनों ही प्रकार के होते है। आन्तरिक अवस्था में कार्य के पहले उसकी प्रेरणा प्रयोजन, अभिप्राय, इच्छा और संकल्प होता है। इस आन्तरिक अवस्था के पश्चात ~~शारीरिक~~ क्रियाएँ होती है और तब उसका वाह्य परिणाम देखने में आता है। अभिप्राय और प्रयोजन दोनों में से नैतिक निर्णय का विषय किस पर आधारित है, यह नीतिशास्त्रियों के सामने एक समस्या है।

प्रयोजन को हेतु भी कहा जाता है। वस्तुत: हेतु अभिप्राय का ही एक अंश है क्योंकि अभिप्राय में साध्य और

साधन दोनों सम्मिलित रहते है। वास्तव में न तो साध्य अच्छा होने से साधन अच्छा हो सकता है और न साधन अच्छा होने से साध्य अच्छा हो सकता है। प्रो० मैकेंजी के अनुसार 'अभिप्राय' के निम्न भेद है-

(i) तात्कालिक और प्रच्छन्न अभिप्राय (Immediate and Remote Intention) :→ एक परिस्थिति में दो व्यक्तियों का तात्कालिक अभिप्राय एक ही होता है परन्तु प्रच्छन्न अभिप्राय भिन्न भिन्न हो सकता है। जैसे डुबते हुए को बचाना। तात्कालिक अभिप्राय है तथा प्रच्छन्न अभिप्राय भिन्न हो सकता है। एक उसका मित्र जान बचाना चाहता है।

(ii) बाह्य और आन्तरिक अभिप्राय :→ अभिप्राय आन्तरिक और बाह्य दोनों ही होता है। जब किसी के दुख को देखकर स्वयं अपने अन्दर जो पीड़ा होता है पर आंतरिक अभिप्राय है तथा दर्द से छटपटाते हुए व्यक्ति का दर्द बाह्य अभिप्राय कहा जाता है।

(iii) प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष अभिप्राय :→ जब एक क्रान्तिकारी प्रधान मंत्री को ले जाने वाले जहाज को उड़ा देना चाहता है तब उसका प्रत्यक्ष अभिप्राय सिर्फ मंत्री को ही मारना है परन्तु अप्रत्यक्ष अभिप्राय में उसमे सवार सभी लोग मारे जायेंगे।

सुखवादियों के अनुसार किसी कर्म का नैतिक मूल्य उसमे अभिप्राय या परिणाम पर निर्भर करता है। बेन्थम और मिल के अनुसार प्रयोजन सिर्फ कार्य का प्रेरक है, क्योंकि सभी लोगों का कार्य इसी प्रकार होता रहता है अतः कर्म के प्रेरकों को अनैतिक मानना मनोवैज्ञानिक भूल है क्योंकि कार्यों के परिणाम से ही शुभ-अशुभ हो सकता है। लेकिन बेन्थम और मिल दार्शनिक के इस तथ्य से कान्ट सहमत नहीं है। कान्ट के अनुसार "हमारी क्रियाओं

के परिणाम उनको नैतिक मूल्य नहीं दे सकते।" सहजज्ञानवादियों के अनुसार भी हमारे कार्यों के स्रोत और प्रेरक तत्व ही उनको अच्छा या बुरा बनाते हैं। प्रो. वटलर का कहना है कि "किसी कार्य की अच्छाई या बुराई बहुत अधिक उस प्रयोजन या हेतु पर निर्भर है, जिससे कि वह किया जाता है।"

अभिप्राय और प्रयोजन का परस्पर सामंजस्य होने पर कोई समस्या नहीं होती है क्योंकि नैतिक निर्णय दोनों पर होता है, परन्तु जब प्रयोजन या हेतु अच्छा हो और अभिप्राय या परिणाम बुरा हो तब यह समस्या उत्पन्न होती है कि नैतिक निर्णय प्रयोजन पर किया जाय या अभिप्राय पर। जैसे - एक डॉक्टर रोगी को भला चंगा करने के हेतु उसका आपरेशन करता है, परन्तु बहुत सावधानी करने पर भी रोगी की मृत्यु हो जाती है। इस उदाहरण में प्रयोजन अच्छा है परन्तु अभिप्राय बुरा है। अत: क्या डॉक्टर का आपरेशन करना अनुचित था? नीतिशास्त्रीय सिद्धान्त के अनुसार मानव के किसी कार्य के उसी अंश को नैतिक अथवा अनैतिक कहा जा सकता है जिसके लिए वह स्वतंत्र रूप से उत्तरदायी है। जैसा कि गीता में कहा गया है कि कार्य का फल मनुष्य के हाथ में नहीं है। अनुभव और इतिहास भी इसी का समर्थन करता है अत: जब परिणाम हमारे हाथ में नहीं है तब हम उसके उत्तरदायी नहीं हो सकते तथा उसको नैतिक और अनैतिक भी नहीं कह सकते।

कर्म की नैतिकता का निर्धारण मनुष्य के चारित्र और आदत से नहीं किया जा सकता है क्योंकि अभिप्राय चारित्र प्रकट करता है। किसी मनुष्य के व्यवहार को देखकर नहीं हम उसका चरित्र जानते हैं। अत: जिस सीमा तक कोई विशेष व्यवहार किसी व्यक्ति के चरित्र को प्रकट करता है उस सीमा तक हम उसके चारित्र को अच्छा या बुरा कह सकते हैं। परन्तु चरित्र एक जटिल मनोवैज्ञानिक संरचना है। बुरे से बुरे व्यक्ति भी कभी अच्छे काम करते हैं और अच्छे से अच्छे व्यक्ति भी कभी ~~बुरे काम करते~~ बुराईयों के शिकार होकर

04

कार्य कर सकते हैं। अत: कार्य के नैतिक मूल्यों का निर्धारक चरित्र नहीं हो सकता ।

निष्कर्ष:→ इस प्रकार नैतिक निर्णय का मुख्य विषय सिर्फ अभिप्राय नहीं हो सकता है, क्योंकि कर्म का वास्तविक स्वरूप कर्ता के बिना नहीं ज्ञात हो सकता। अत: नैतिक निर्णय किये गये कर्मों का नहीं अपितु करनेवाले अर्थात् कर्ता का होता है अत: कर्म की नैतिकता का निर्धारण अभिप्राय और प्रयोजन दोनों से किया जाना चाहिए नैतिक निर्णय के विषय प्रयोजन अभिप्राय:, साध्य, साधन आदि स्वेच्छा मूलक कार्य है।

The End